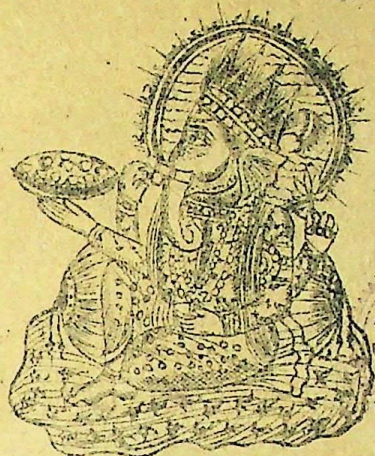


भारती भूषणा

بھارتی بھوشن

श्री गिरिधर दास कवि राज कृत

जिसमें

सम्पूर्णा आलङ्कार के लक्षणा उदाहरण सहित अति

सरलता पूर्वक वर्णित हैं

पहिली बार

मथान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

अक्टूबर सन् १९०८ ई०

विशेष

बुद्ध महानिष्पत्त्यात् का कबारस १००० वर्षं च जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वे दूसरे हरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत कम पायात से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिस को व्योपार की दृष्टि हो वह छापै रवाने के बुहतमिस अथवा अमलिक के नाम से बत भेज कर जीमत का निगाय करले ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भावा हृदिहास	६ भीष्म पर्व	बाल काण्ड	जने कार्य
महा भारत	७ द्रोण पर्व	अयोध्या काण्ड	छन्दोगाचपिण्ड
१ हिस्सा में आदि पर्व	८ कार्ग पर्व	३ आरारय काण्ड	कविकुल कल्पतरु
सभा पर्व वन पर्व	९ शल्य पर्व गदा	४ किष्किन्ध्या काण्ड	रम राज
२ हिस्सा में विराट पर्व	सौत्रिक पर्व मयथी	५ सुन्दर काण्ड	सत्सद्वैतरीक बिहारी
उद्योग पर्व भीष्म पर्व	पिक व विज्ञो कर्ष	६ लंका काण्ड	सत्सद्वै
द्रोण पर्व	स्त्री पर्व	७ उत्तर काण्ड	सभा बिलास
३ हिस्सा में कार्ग पर्व	१० शत्रु पर्व राज	रमायणाश्वार्थ कोश	गुलसी शब्दार्थ प्र
शल्य पर्व गदा पर्व	धर्म व आपद धर्म	रमायणा की दृष्टि	भजनावली
सौत्रिक पर्व योषिक	व मोक्ष धर्म व दान	रमायणा गानत हीयि	प्रेम रत्न
पर्व विशेष पर्व स्त्री	धर्म	रमायणा गीतावली	युगल बिलास
पर्व शत्रु पर्व राजध	११ आश्वमेध आश्र	रमायणा गीतावली	चित्र चन्द्रिका
र्म मोक्ष धर्म	म वासिक सुशालय	विनय पत्रिका वादूमी	बारह मासावलदेव
४ हिस्सा में शत्रु पर्व	व महा प्रस्थान सु	विनय पत्रिका वादूमी	मनोहर लहरी
दान धर्म, आश्वमेध	गा रोहसा	वेदान्त	रंगालहरी
आश्रम वासिक पर्व	१२ हरिवंश पर्व	योग वासिष्ठ	जगद्विन्द
मुशल पर्व, महाप्र	रमायणा राम बिलास	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	राग
स्थान लुगगी रोहसा	रमायणा तुलसी क-	काव्य	राग प्रकाश
पर्व हरिवंश पर्व	रमायणा मय मावस	सूर सागर	लावनी
महा भारत पर्व अले	दीपिका कोश आदि	कृष्ण सागर	शृंगार वनीसी
हृदा भी है	मथा मयत सवीर	विश्राम सागर	किस्मद्वैतरीह
१ लादि पर्व	मथा जिल्द वन्धी	प्रेम सागर	जानार्थ नो मंगल वली
२ सभा पर्व	तथा मोटे अक्षरों की	ब्रज विलास	वहसागर
३ वन पर्व	मयत सवीर	ब्रज विज्ञान छोटा	शिव सिंह सरोज
४ विराट पर्व	मथा मयक्षेपक	कृष्ण प्रिया	भक्त माल
५ उद्योग पर्व	रमायणा लनों कांड	विनय मुक्तावली	रमा भिषेक नाटक

श्रीगणेशाय नमः

अथ भारतीभूषण

लिरव्यंते
दोहा

॥ श्रीवल्लभ आचार्य के भजत भजत सब पाप ॥ श्रीवल्लभ
भ करुणा करत हरत सकल संताप १ विधि भव तरनी हम
लही जम गरु करुनाहिं ॥ विधि भव तरनी नमन नित हरि
पद मम उर माहिं २ मोहन मन मानी सदा बानी को करि
ध्यान ॥ अलंकार वरनन करत गिरिधर दास सुजान ३
सुंदर वरनन गन रचित भारति भूषण यह ॥ पदहु गुनहु
सीखहु सुनहु सन कवि सहित सनेहु ४ अथोपमाल
द्वारा ॥ सो उपमा जहं बरनिये उपमेय रु उपमान ॥ समता
ई शोभित सदा हमि कवि कहहिं सुजान ५ उदाहरण य
था ॥ अानन पंचानन तिलक पंचानन करि मोह ॥ खरि
रमासी राधिका भरी मोद संदोह ६ उपमानादि के ल
क्षण ॥ जाकी समता दीजिय तिहि कहिय उपमान ७
जाकी सम करि बरनिय सो उपमेय न अान ८ उपमेय
रु उपमान गत जो कछु धरम लखाय ॥ सो सा ९ अग सु
हमि वरनहिं कविराय ८ समता बोधक शानति सीविन
क नाम ॥ बरने गिरिधर दास हमि लखे सीध गति नो

कंबुकमल अरुविंव फल सुक सुवरन की सीप ॥ इनहिं
 आदि उपमान हैं ससुहु कविकुल दीप ॥ १० ॥ कंठ अ्यों-
 रिख अपल कावली अधा नासिका धौन ॥ इनहिं आदि उ-
 पमेय हैं वरनहिं वर बुधि धौन ॥ ११ ॥ सुंदरता सुकुमारता
 सामलता सुललाम ॥ एसाधारन धर्म हैं मनहरता रस
 धाम ॥ १२ ॥ लौ सो से सी सीं सरिस सम समान इव वल ॥
 ये सो से से एसकल उपमा वाचक मूल ॥ १३ ॥ मिमिति-
 मि जै सोइ ते सोइ यथा तथा अ्यों त्योहिं ॥ सऊ उपमा वा-
 चक हि दोय मिले ते होहिं ॥ १४ ॥ अथ पूर्णोपमा ॥ उप-
 मान रु उपमेय जहें उपमा वाचक होइ ॥ सह साधारन ध-
 र्म के पूरन उपमा सोइ ॥ १५ ॥ उदाहरन ॥ सुख सुख करनि
 सिका सरिस सपरी से चलनैन ॥ छीन लंक हरि लंक सी
 बाढी ये ना ये न ॥ १६ ॥ अथ लुप्तोपमा ॥ उपमानादि क
 जे कहें तिन चारि हैं पंकारि ॥ इक विन है विन तीन विन
 लुप्तोपमा विचारि ॥ १७ ॥ वाचक लुप्ता प्रथम विन उपमा
 वाचक होइ ॥ द्वितीय धर्म लुप्ता कहिय धर्म रहित है सो-
 इ ॥ १८ ॥ तीजी है वाचक धरम लुप्ता सुकवि सुजान ॥ विन
 वाचक उपमेय के लुप्ता चौथी जान ॥ १९ ॥ पंचई है उपमान
 मनि विन वाचक उपमान ॥ छरी धरम उपमान विन सत-
 चता भी है ॥ २० ॥ उपमान रु वाचक धरम लुप्ता अठई जा-
 नानि लुप्तोपमा कवि जन कहहिं वखान ॥ २१ ॥
 म उदाहरण ॥ सुख पूरन ससि सोहनो अमल
 तथा ॥
 रासाधार ॥ कनक वेलि कल कामिनी मारवन ।

१ आदि पद
 २ सभा पद
 ३ वन पद
 ४ विराट पद
 ५ उद्योग पद

मधुरे वैन ॥ २२ ॥ धर्म लुप्तो दाहरा ॥ बिज्जुलता सी नागरी स
 जल जलद से श्याम ॥ खरो कुज में छवि भरो दोऊ अति अ
 भिराम ॥ २३ ॥ वाचक धर्म लुप्तो दाहरा ॥ वैन सुधा दृगमे
 न सर सैन सैन के सैन ॥ बद नरेन पति लख दुहरि रेन चै
 न चर दैन ॥ २४ ॥ वाचकोपमेय लुप्तो दाहरा ॥ अटा उद
 य होतो भयो छवि धार पूरन चंद ॥ हों बलि चलि अवलो
 किये मन मथ करन अनंद ॥ २५ ॥ उपमान लुप्तो दाहरा
 ॥ सुंदर कंठ कपोत सो के हरि सी करि खीन ॥ जे हरि भ्रम
 कांचे खरी हे हरि कुंज गलीन ॥ २६ ॥ वाचकोपमान लुप्तो
 पमा ॥ भवन दीप कामिनि दिपति सरप सांस गुर सेति ॥
 कौन हेतु हरि मौन वह बूझेहु उत्तर देति ॥ २७ ॥ धर्मोप
 मान लुप्तो दाहरा ॥ घन समरन गरजत फिरे कौं काल
 सी मारि ॥ सागर सी गंभीरता समर धीर त्रिपुरारि ॥ २८ ॥
 उपमान वाचक धर्म लुप्तो दाहरा ॥ मृग नैनी गज गामि
 नी पिक चैनी सुकुमारि ॥ के हरि करि वारी खरी नारी ल
 खो मुरारि ॥ २९ ॥ अथ मालोपमा ॥ जहँ एकहि उपमेय के
 वरने बहु उपमान ॥ ताहि कहहि मालोपमा कवि सुजान
 मतिमान ॥ ३० ॥ उदाहरा ॥ मृग से मन मथ बान से पीन
 मीन से स्वच्छ ॥ कंजन से खंजनन से मन रंजन तो अछ
 ॥ ३१ ॥ अथ रसनोपमा लक्षणा ॥ कथित प्रथम उपमेय
 हैं होत जात उपमान ॥ ताहि कहहि रसनोपमा जे जग सु
 कवि प्रधान ॥ ३२ ॥ उदाहरा ॥ मति सी नति नति सी विन
 ति विनती सी रति बाह ॥ रति सी गति गति सी भगति तो वै

पवन कुमार ॥३३॥ अनन्वय लक्षणा ॥ एकाहि में उपमे-
 यता उपमानता जु होइ ॥ दूजे सों समता नहीं यहै अन-
 न्वै सोइ ॥३४॥ उदाहरण ॥ तुव कीरती सी स्वच्छ नर तुव
 कीरति है श्याम ॥ सुर सरिता सी सुरसरी शोभा भरी मुदा-
 म ॥३५॥ उपमेयोपमा लक्षणा ॥ है ही जहं परसपर उपमे-
 यह उपमान ॥ सो है उपमेयोपमा तीजे सो समतान ॥३६॥
 उदाहरण ॥ अमल कमल से नैन है कमल नैन से स्वच्छ
 ॥ रुचिर काम से श्याम है हरि सम काम प्रतच्छ ॥३७॥ अ-
 यमतीप लक्षणा ॥ उपमेयहि उपमान ज व कीजे गिरिध-
 रदास ॥ तांको पांच मतीप में प्रथम जानिये खास ॥३८॥
 उदाहरण ॥ तो ऐसी नित्य काम की तो सुख सो एकेस ॥
 नव पल्लव तब अधर से कबु कंठ समवेस ॥३९॥ द्वितीय
 प्रतीप लक्षणा ॥ जहं प्रतीप उपमान को गर्व हरे उपमेय
 ॥ दूजो कहहिं प्रतीप तेहि जिनकी बुद्धि अपमेय ॥४०॥ उ-
 दाहरण ॥ कहा करति निजरूप को गरब गहे अपविदेक ॥
 रमा उमा सचि सारदा तो सी तीय अनेक ॥४१॥ तृतीय म-
 ल ॥ अनन्वाद्य उपमेय सों जब पावे उपमान ॥ तीजो
 कहहिं प्रतीप तेहि कवि अवनीप सुजान ॥४२॥ उदा-
 हरण ॥ नीच पने को क्यों करत तूं उर बीच गुमान ॥ संत
 ज तो से अधिक जग हरि द्वेषी पहिचान ॥४३॥ चतुर्थ म-
 ल ॥ समता लाय कहोय नहि जब जाहि उपमान ॥ गि-
 रिधरदास प्रतीप सो है चतुर्थ मतिमान ॥४४॥ उदाहरण
 तो सुख ऐ सो पंक सुत अरु संक यह पात ॥ बर नहि

दृष्ट्या असंक कवि बुद्धि रं व विख्याति ॥ ४५ ॥ पंचमप तीप
 लक्षणा ॥ व्यर्थ होइ उपमान जब वर उपमेय समीप ॥ गि-
 रिधरदास बरवानिये पंचमताहि प्रतीप ॥ ४६ ॥ उदाहर-
 ण ॥ देखि रूपवत काभिली कहा उख सीनारि ॥ कहाँ मै न
 काँ मै न तिय कमला शैल कुमारि ॥ ४७ ॥ द्विविध रूपक-
 लक्षणा ॥ विषई विषयहि बरनिये करि अभेदत द्रूप ॥
 अधिक न्यून सम करि सोई पर विधि रूपक रूप ॥ ४८ ॥ अधि-
 कोक्ति अभेद रूपक उ० ॥ घनगज चढ़ि आकाश मग चले
 इंद्र अरि जोइ ॥ सुधा अचत शशि कुंज सिर मोतिन जगम-
 ग होइ ॥ ४९ ॥ न्यूनोक्ति रूपक उदा० ॥ कुसुम धनुष बिनु कु-
 सुम धनु देवो कुंज गलीन ॥ चली जात जग अमल यह
 कमला कमल विहीन ॥ ५० ॥ समोक्ति अभेद रूपक उदा०
 नु अस्मान ससि दुरवहरन सुधा धरन छवि खानि ॥
 रजनी रंजन रसिक प्रियतम हर आनंद दानि ॥ ५१ ॥ अ-
 धिकोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥ जस धुज बाधुज तें अधिक
 तीन लोक फहरात ॥ धर्म मित्र कह मित्र सों भारत जियत
 संग जात ॥ ५२ ॥ न्यूनोक्ति तद्रूप रूपक उदा० ॥ अपर धने-
 श जने शयन नहि पुष्पक आसीन ॥ दुतिय गणेश सुवेश
 शुचि सोहत सुंदर विहीन ॥ ५३ ॥ समोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥
 यह पालत संसार को धालत पर को पच्छ ॥ अपर मनो-
 हर रूप धर अंबुज अछ पनच्छ ॥ ५४ ॥ परिणाम ल० ॥
 वरन नीय उपमान हैं जवें कोरे कछु काम ॥ गिरि धरदास
 बरवानि सतासु नाम परिनाम ॥ ५५ ॥ उदाहरण

पंकज तें चलत कर कर पंकज लै कुंज ॥ मुख पंकज तें का
 हत हरि वचन रचन सुद मंज ॥ चलेखल क्षण ॥ ॥ एकहि
 बहुबहु विधिलखेंद कहि वरनि बहु गीति खेपा लंकात
 उभय कवि वरनहिं करी प्रीति ॥ ५० ॥ प्रथम उखेख ॥
 तियन काम जाहवन हित नंद सुवन नव अंग ॥ खरखी
 कंस जन मुनिन हरि मोहन मविसे रंग ॥ ५१ ॥ द्वितीय उ-
 खेख उदा ॥ तेज तरनि सुद दानि शशि शत्रुन कल सुहा-
 म ॥ प्रजनारिन कों काम से अहो सदा घन श्याम ॥ ५२ ॥
 सुमिरन भ्रम संदेह ल ॥ सुमिरन भ्रम संदेह स अलंका-
 र हैं तीन ॥ लक्षणा लक्षित नाम में वरनहिं सुकवि प्र-
 वीन ॥ ६० ॥ सुमिरन उ ॥ सुनिको विल धुनि वचन की
 आवति है सुधि मोहि ॥ लखि शशि मुख की होति सुधि
 तन सुधि घन कों जोहि ॥ ६१ ॥ भ्रम उदाहरण ॥ जानि श्या-
 म घन घन तु हैं नाचि उठे वन मोर ॥ हेम सलाका मानि
 तोहि चोर फिरें सब ओर ॥ ६२ ॥ संदेह उदा हरण ॥ रमा कि-
 राधा कै गिरि गिरिजा कै रति जानि ॥ श्याम काम धों क-
 लपत हनारायण सुद दानि ॥ ६३ ॥ सुदा पद्मति लक्षणा ॥
 धर्म दुरावे औरही करि आरोप सुजान ॥ सुदा पद्मति क-
 हहि तेहि अपलंकार मति मान ॥ ६४ ॥ उदा ॥ पहिरे श्या-
 मन पीत पट घन में विजु विलास ॥ सिर सारी नहिं ता-
 स की दंदु कला परकास ॥ ६५ ॥ हेतु पद्मति ल ॥ सोइ
 सुदा पद्मति विषे उक्ति सुक्ति सुतय च ॥ गिरि धर दासा
 वरानि रहेतु अप नृति तच ॥ ६६ ॥ उदा ॥ तियन निसा

६

घन वन चले हेमवेलि नहिं जाय ॥ छरकि जलद ते जल-
 द बहु दामिनि जात लायाय ॥ ६० ॥ पर्यस्ताप पनुतिल ० ॥
 और विषे गुन और को जव कीजे आताय ॥ तव पर्जं स्ताप-
 नुती इमि कवि कहहिं सचोप ॥ ६१ ॥ उदा ० ॥ नही सकसु-
 र पति अहे सुरपति नंद कुमार ॥ रतना कर मागर नही म-
 पुरा नगर बजार ॥ ६२ ॥ हेतु पर्जं स्ताप पनुतिल लक्षणा ॥ पर्जं-
 स्ताप पनुति विषे हेतु सहित जो कोइ ॥ धर्म छपावे हेतु ।
 सुत वही नाम तव होइ ॥ ६३ ॥ उदाहरणा ॥ तम हर विनहिं
 हरि भजन तमी होइ रविलोक ॥ कहूं तम रहै न हरि भजै ।
 इमि वनहिं मति ओक ॥ ६४ ॥ भ्रंता पनुतिल ० ॥ भ्रंति
 और की और जव करे बचन सों नास ॥ भ्रंता पनुति ।
 कहहिं तेहि कवि जन गिरि धरदास ॥ ६५ ॥ उदाहरणा ॥
 जीवन दीने श्याम घन सजनी रजनी आइ ॥ क्यों सरि व-
 चिन वस्मात के नहिं नहिं गोकुल राइ ॥ ६६ ॥ छेका पनुति
 ल ॥ संकानारी और की सांची बात दुगइ ॥ छेका पनु-
 ति कहत हैं ताहि कविन के राइ ॥ ६७ ॥ उदा ० ॥ अंचिची-
 रतन सज्जन किय हो सिंगार समच्छ ॥ कुंजन में क्यों शा-
 म सरि नहिं करील को वच्छ ॥ ६८ ॥ कौतवा पनुतिल ०
 और हि वरने और ई मिसि करि वर मति मान ॥ ताहि कौत-
 वा पनुती भूषन कहहिं सुजान ॥ ६९ ॥ उ० ॥ कुचमि-
 स करि मन मथ मथन नित्य उर करत निवास ॥ पावस
 मिस कर वज्र ले इंद्र देत वज्र वास ॥ ७० ॥ उत्प्रेक्षा लक्ष-
 णा ॥ उत्प्रेक्षा विधि तीन हैं इह विधि कहहिं प्रवीन ॥

वस्तु हेतु फल रूप करि जिनकी मतिरस पीन ॥ ७८ ॥ वस्तु
हेतु फल भेद वर्णन ॥ वस्तु द्विविध उक्ता सपद अनुक्ता सप-
द जानि ॥ हेतु सुफल सिद्धा सपद असिद्धा सपद मानि ७९
उक्ता सपद वस्तु त्वेक्षो दाहरण ॥ हालाहल निकस्यो महा
भरत ज्वाल की जाल ॥ सिंधु मथत मानो कदी बड़वानल
की ज्वाल ॥ ८० ॥ अनुक्ता सपद वस्तु त्वेक्षो दाहरण ॥ वरष-
त मानो चंद्रमा किरिन वज्र कनवान ॥ सावन में धावन
लगे धनु यम गन अस मान ॥ ८१ ॥ हेतु सिद्धा सपद त्वेक्षो
दाहरण ॥ तुल्य करतल सत मनु गद्दी हिंदोरा डोर ॥ ताप-
ट छाया पात मनु श्यामल नंद किशोर ॥ ८२ ॥ हेतु असि-
द्धा सपद त्वेक्षो दाहरण ॥ तोड़ छन समता चहत मानहु
ती छन वान ॥ छुरि महीप कमान सों लेहि मृगन को पा-
न ॥ ८३ ॥ फल सिद्धा सपद त्वेक्षो दाहरण ॥ मोहिलरि व
चपला सकुचि पुनि घन में जाति समाइ ॥ यों गुनितिय
मनु मंदिर मुख मंदिर वैठी आइ ॥ ८४ ॥ फल असिद्धा स-
पद त्वेक्षो दाहरण ॥ तो करि समता हेतु मनु सिंह करत
वनवास ॥ कुच समता हित सहत मनु गिरि हिम घास
बतास ॥ ८५ ॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक ॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक मनहुं
मनु जनु आदिक आहि ॥ जहां नहीं ए जानिए गम्यो त्वे-
क्षा ताहि ॥ ८६ ॥ गम्यो त्वेक्षो दाहरण ॥ तोरि तीर तरु के ।
सुमन वर सुगंध के भीना जमुना तो पूजन करत वृन्दा
वन को पीन ॥ ८७ ॥ रूप काति शयोक्ति लक्षण ॥ जहं व्यं-
जक उपमेय को कहि केवल उपमान ॥ रूप काति शयोक्ति

तिहि वरनहिं बुद्धिनिधान ॥८८॥ उदाहरण ॥ सुसि में वि-
 द्दुम ता विषे कुंदा वलिदरसाइ ॥ तापें सुक सुक पै धनुष
 विवि सर सहित लखाइ ॥८९॥ सापन्हव रूप काति शयो-
 किलक्षण ॥ पर्य स्तापन्हति सहित यही अलंकृत यव ॥
 सापन्हव रूपक सहित अति शयोक्ति है तव ॥९०॥ उदाहर-
 ण ॥ तुअ मुख में निवसत सुधाहे राधे सुकुमारि ॥ ताहि
 बखाने चंदमा विन बूझै भ्रम धारि ॥९१॥ भेद काति स-
 योक्ति लक्षण ॥ औरै पद भेदक जहां आति शयोक्ति में
 होइ ॥ भेद काति शय उक्तिवर अलंकार है सोइ ॥९२॥
 उदाहरण ॥ अवलोकनि बोलनि हंसनि डोलनि औरै
 औरै ॥ आवनि मृदु गावनि संवै औरै याके तौर ॥९३॥
 संबधाति शयोक्ति लक्षण ॥ जहां देत संबध सों सुकवि
 अयोगहि योग ॥ संबधाति शयोक्ति तिहि वरनत पंडित
 लोग ॥९४॥ उदाहरण ॥ चलत अवध पुर पियत जलनभ
 सरिको भरि सुंद ॥ कलस लेत धुव धाम के तुम्हरे रामभ-
 सुंद ॥९५॥ असंबधाति शयोक्ति लक्षण ॥ जोगाहि करि-
 य अजोग जवमति अनुसार प्रकास ॥ असंबध अति
 शय उक्ति कहिये गिरिधरदास ॥९६॥ उदाहरण ॥ गवि
 पावे सनमान कों तेज देखि तुअ भूप ॥ पावि सरतें कवि
 बुद्धि ते सदा निरादर रूप ॥९७॥ अकमाति शयोक्ति लक्षण
 ॥ काणा औ कारज जवै दुहैं वरनिये संग ॥ अकमाति श-
 य उक्ति सों भूषन कविता संग ॥९८॥ उदाहरण ॥ उखों सं-
 ग गजकर कमल चक्र चक्र धर हाथ ॥ करतें चक्र सुनक

शिर धारें विलये साय ॥८६॥ चपलाति शयोक्लिलक्षण
 कारन के नाम हिसुने कारज आसुहि होइ ॥ चपला अपति
 शय रज्ज यह अलंकार है सोइ ॥१००॥ उदाहरण ॥ जान क
 हो परदेश पिय सुनि सुखी योंवाल ॥ मुंदो कर पहंची भई
 पहंची अ की माल ॥१०१॥ अत्यंतति शयोक्लिल ॥ पूर्वी-
 पर कम ना मिले जाको गिरि धर दास ॥ अत्यंतति शयो-
 क्लितेहि कवि जन करहि प्रकास ॥१०२॥ उदाहरण ॥ हनुमान
 की पूर में लगन न पाई आगिलंकासिगरी जरि गई गय नि-
 शा कर भागि ॥१०३॥ तुल्य योगिता ल ॥ क्रिया और गुन
 करि जहां धर्म एकता होइ ॥ सार्यन को कै इतर को तुल्य
 योगिता सोइ ॥१०४॥ प्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥
 अरुन उदय अवलोकि कै सकुचहि कुवले चार ॥ इंदु उद-
 य लखि स्वरिनी वदन वनज चहुं ओर ॥१०५॥ अप्रस्तुत
 तुल्य योगिता उदाहरण ॥ लखितेरी मुकुमारता एरीयाज-
 गमाहि ॥ कमल गुलाब कठोर से काकों भासत नाहि ॥
 १०६॥ द्वितीय तुल्य योगिता लक्षणा ॥ तुल्य वृत्ति हित अ-
 हित मैं जब वरनिय निरधारि ॥ तुल्य योगिता अपर यह व-
 नहिं मुकवि विचारि ॥१०७॥ उदाहरण ॥ गिरि धर दास ज-
 हान में तुम अपति चतुर सुजान ॥ सर कीड़ा करि हरत हो
 तिय को सरि को मान ॥१०८॥ तृतीय तुल्य योगिता लक्ष-
 णा ॥ सम करि ए उत कष्ट गुन बहु को एक हित्याइ ॥ तुल्य
 योगिता तीसरी ताहि कहें कवि गद ॥१०९॥ उदाहरण ॥ मु-
 म विधि बुध विधु विधु पति विधु धर ॥ बुद्धि निधान ॥ तुम

भूयहो कल्पतरुगुणनिध चतुरसुजान ॥११०॥ दीपकान०
जहं अवर्य अरुवर्यको धर्म एकगुनिसेहु ॥ अलंकार दीपक०
इही नामतासु कहिदेहु ॥१११॥ उदा० ॥ सोहत भूपतिदानसौ फ
ल फूलन आएम ॥ ऊंचे तन सों हिरद बरगति सों अवसु
दाम ॥११२॥ आहत दीपकल० ॥ आहत दीपकतीनविधि
पद आहत इकजानि ॥ अर्थी वृत्ति पद अर्थकी आहृति
इमि पहिचानि ॥११३॥ पद आहृति दीपक उदा० ॥ नंदसु
वन व्याहृकरत बाढी प्रीतिअथोर ॥ परसति सुंदीतरस
तिय परसत दृगदृग कोर ॥११४॥ अर्थी वृत्ति दीपकरदा०
॥ दोरहिं संगर मत्त गज धावहिं हय सुसुदाइ ॥ नदीहिं रा
महिं बहूनदी नचहिं नर हरपाइ ११५ ॥ पदार्थी वृत्ति
दीपक उदा० ॥ गरजत हैं रन रामजू गरजत हैं दस सीस ।
धावत रिसि भरि खनि चरहुं दिशि धावत कीस ॥
११६ ॥ प्रतिवस्तूपमालक्षणा ॥ हाहिं वस्तु प्रति समजवै
उपमेयरु उपमान ॥ जुदे जुदे पद करि कही प्रतिवस्तूपम
जान ॥११७॥ उदाहरन ॥ साधु संग पायहु नहीं खलको
खल पनजाय ॥ सुधा पिआ एहु अहि नहीं तजे गाल
दुख दाय ॥११८॥ दृष्टान्तल० ॥ वार्य अवर्य दुहुन को
भिन्न धर्म दसाइ ॥ जहाँ विंव प्रति विंव सों सो दृष्टांत क
हाइ ॥११९॥ उदाहरण ॥ रूपवती तुमहीं अहौ रती पशव
ती जानि ॥ नृप तुमहीं जानी अहौ दानी सुरतरु मानि ॥
१२० ॥ निदर्शनालक्षणा ॥ तीन प्रकार निदर्शना कवि व
रनहिं सविवेक ॥ सदृश दोऊ वाक्यार्थ को एकाएक ॥

नयक॥१२१॥उदाहरन॥जो दाता को सरल चित नहीं कु-
 रिलता भास॥पूरन बिधु अकलंकता जानिय गिरिधर
 दास॥१२२॥दुतिय निदर्शनाल॥उपमानो उपमेय को ध-
 र्म धरै जवल्याइ॥पलरै हूं सुनि दर्शना दुतिय कहहिं क-
 विराइ॥१२३॥उदाहरण॥लई चपलई मीन की तो दग
 नारि निहाइ॥नृपतो पानि उदारता लीनी सुरतरु चारु
 ॥१२४॥तृतीय निदर्शनाल॥जहं सदर्थ असदर्थ की
 बोध किया करि होइ॥तीजी तहां निदर्शना बरनहिं क-
 विसव कोइ॥१२५॥सदर्थ उदाहरण॥गुरु पादोदक सि-
 र धरिय सदा जतावत एहु॥सिर धारत हैं गंग को महादे-
 व करि नेहु॥१२६॥असदर्थ उदाहरन॥निडर पनो करि
 वदन को नास जनावत जाति॥करत मसाल मुकाविले।
 वाती तुरत बुझाति॥१२७॥व्यतिरेकल॥वरनिय वर्य
 अवर्य में जहं विशेष कबिराइ॥अधिक न्यून सम भेद
 करि सो व्यतिरेक कहाइ॥१२८॥अधिक उदाहरन॥भूप
 कल्पतरु से अहो वैभव बुद्धि विशेषि॥तिय पल्लव से तो-
 अंधार अधिक अमृत रस पेरि॥१२९॥न्यून उदाहरन॥
 हरि से हरि जन जानु पै हरि घर घर बिश्राम॥कुटिल सर्प
 से पै सरपडस ताहि करत तमाम॥१३०॥सम उदाहरन॥
 जो निज धरै में परत चूर करत दलिताहि॥पण्य संग पै
 गहत नहि खल खल चंद सदाहि॥१३१॥सहोक्ति ल॥
 जहं मन रंजन वरनियै एक संग वहु वात॥सो सहोक्ति
 आभन है ग्रंथन में निग्यात॥१३२॥उदाहरन॥आई

(चतुर्थाई)

चतुर्दशिरतहनाई तो संग ॥ मन मोहन सों मन मि-
 ल्यो दुन नैनन के संग ॥ १२३ ॥ मोक्षिलक्षणा ॥ द्वे विध
 कहहिं विनोक्ति कीं कवि बुद्धि के ऐन ॥ प्रस्तुत कछु
 विन गूल सर कछु विन सोभा देन ॥ १२४ ॥ प्रथम वि-
 नोक्ति उदाहरण ॥ कवि विन नहि सों है सभा निखि विन
 सुधानिवास ॥ फवतन गिरि धर दास विन गिरि धर मि-
 री धर दास ॥ १२५ ॥ द्वितीय विनोक्ति ॥ धन्य धन्य तो
 को धनो विना गल सरसात ॥ राम गजत व सुयश वरत
 स कर पुनि दर सात ॥ १२६ ॥ समासोक्ति लक्षणा ॥ प्रस्तु-
 त में जवहीं कुरें अपसुगुहतीत ॥ समासोक्ति भूषन के
 हैं ताको कवि कुल कांत ॥ १२७ ॥ उदा ॥ सजनी रजनी
 पाइ शशि विहरत सभा पूर ॥ आलि गत प्राची सु-
 दित कान्ति के मूर ॥ १२८ ॥ परिकल लक्षणा ॥ जहाँ वि-
 शेष न दीजिये सह आसय आभिसम ॥ गिरि धर दास
 वखानिये भूषन करि परदास ॥ १२९ ॥ उदा ॥ चक्र पा-
 नि हरि कीं निखि अतुर जात नलि दूर ॥ रस वरमत ध-
 न श्याम तुम ताप हरत सुद पूर ॥ १३० ॥ परिकरी कुल ल-
 न ॥ जहाँ विशेय हि वानिये आभि प्राय के संग ॥ परिक-
 रं अंकुरती न है भूषन कविता संग ॥ १३१ ॥ उदाहरण
 मोरस नाने आज बहु पियते कहैं कुबोल ॥ आवत
 हीं पुजवावतो मूर पताप अतोल ॥ १३२ ॥ श्लेष लक्षणा
 बहुत अर्थ जुत शेष है भूषन कहैं प्रवीन ॥ वार्य अ-
 वार्य दुहन के आशित भेद सुतीन ॥ १३३ ॥ यकृतानेक

विषयों को दाहरा ॥ अहिसवार रारि बान जित नरकदा-
 लक जित काक ॥ विजय मित्र बल बंधु पुत्र मन्त्रु कृत कुच-
 री वाक ॥ १४४ ॥ अप्रकृता नैक विषय श्रेयोदाहरा ॥ तिय
 तो से सी चंचला जीवन सुखद समच्छ ॥ बसति हृदय घ-
 न प्रणम के वर सारंग सुअच्छ ॥ १४५ ॥ प्रकृता प्रकृता ने-
 क विषय श्रेयोदाहरा ॥ रति वल्लभ कर कुसुम बरंग
 श्याम धन चारु ॥ विष में सर पद में गहं जल चर केतु उ-
 दाह ॥ १४६ ॥ अप्रस्तुत प्रशंशालक्षणा ॥ अप्रस्तुत बनन
 विषे मस्तुन वरन्यो जाय ॥ अप्रस्तुत पर संसर्त हि कहहिं
 कबिन के गय ॥ १४७ ॥ उदाहरा ॥ धन्य श्रेष्ठ सिर जगत
 हित धारत भुवि को भार ॥ बुरे बाध अपराध विनु मृग को
 करत अहार ॥ १४८ ॥ प्रस्तुतां कुरलक्षणा ॥ द्योतन प्रस्तुत को
 जबै प्रस्तुत ही सों होइ ॥ प्रस्तुत अंकुर आभन ताहिक
 हहिं सब कोइ ॥ १४९ ॥ उदाहरा ॥ तूंगज तजि मंदा कि-
 नी सरिता छुद्र अन्हात ॥ कहा अर्पित तजि मालती साल
 मली दिग जात ॥ १५० ॥ पर्यायोक्ति लक्षणा ॥ कहिय बात
 रचनान करि पर्यायोक्ति बखानि ॥ मिसु करि करिज साधि
 ये यही अलंकृत जानि ॥ १५१ ॥ प्रथम उदाहरा ॥ जाको
 मन सब जगत मनि जग प्रमाण इक स्वांस ॥ तिनके सबके
 चरण कों बंदत गिरि धर दाम ॥ १५२ ॥ द्वितीय पर्यायोक्ति उ-
 दाहरा ॥ सुंदर श्यामा श्याम दोष धरि कर होइत आज ॥
 तबलों आवति होइ मैं दा बन करि कछु काज ॥ १५३ ॥ व्या-
 ज स्तुतिल ॥ व्याज स्तुति निंदा मिमो स्तुति जहं बनी जाइ

निदा निदा स्तुति निदा स्तुति बरहिं कवि गय ॥२५॥ निं
 दा व्याज स्तुति को उदाहरा ॥ भक्त बल्लभ धन श्यामज
 तुम सों अहेन और ॥ गरवत सब के मरि नहिं सों भ
 कहे भो ॥२५॥ अस्तुति व्याज निदा को उदाहरा ॥
 यहुना तुम अविबेकिनी कौन लिखा यह ॥ गपिन
 सो निज बंधु को मान करायत भंग ॥२५॥ अस्तुति व्या
 ज स्तुति को उदाहरा ॥ एक बार नामहि लिखे कात को
 टि अघनाश ॥ धन्य संत जा अरकात से से के सब दास
 ॥२५॥ व्याज निदा लक्षणा ॥ जहो निदा के बात करि निं
 दा ही दासाय ॥ ताहि व्याज निदा कहैं अलंकार कवि ग
 य ॥२५॥ उदाहरा ॥ नाकहार नहि विंद रहत सदा
 लय लीन ॥ गरक पाय महें तोहिं धिक् कामी बुद्धि विहीन
 ॥२५॥ आक्षेप लक्षणा ॥ तीन भोति आक्षेप कहैं कवि
 बर नहिं सविबेक ॥ कही बात कों समुझि कहु कौ निषेध
 सुख ॥२६॥ जहो निषेधा भासत है हे आक्षेप द्वितीय ॥
 छिप्यो निषेध रहै जहो आज्ञा प्रगट लतीय ॥२६॥ मयपा
 क्षेप उदाहरा ॥ हरि दजै बैकुण्ठ के हरदासन को वास ॥
 सर्व भौल भूपति करी अघवा अपनो दास ॥२६॥ द्विती
 य आक्षेप उदाहरा ॥ में कवि हों नहिं भूमि पति सुख
 से तुम जग माहि ॥ नहिं में दूती राधिके तुम विन ही वि
 लखाहि ॥२६॥ तृतीयाक्षेप उदाहरा ॥ जाहु जाहु पा
 देश पिय मेहि न कहु दुख भीर ॥ पान आनंद गजाह
 गो रहि है दूत शरीर ॥२६॥ विरोधा भास लक्षणा ॥

भासै जहाँ बिरोध सो अहे बिरोधाभास ॥ भूषण इमिवरन
 न कहिं कविजन गिरिधरदास ॥ १६५ ॥ उदाहरण ॥ १
 मोहन है तोहि मोह अपति याकी उर के माहिं ॥ चार चक्षु
 नृपदृग दोऊ पंकज से दरसाहिं ॥ १६६ ॥ विभावना लक्षणा ॥
 पर बिधि होति विभावना विन कारन के काज ॥ द्वितीय
 अपूरन हेतु तें पूरन कारज साज ॥ १६७ ॥ प्रतिबंधक के
 अच्छत हूं कारज होइ तृतीय ॥ काज प्रकारन तें जहाँ सो
 चतुर्थ कथनीय ॥ १६८ ॥ उपजै हेतु विरुद्ध तें कारज पंचम
 सोइ ॥ कारन जनमैं काज तें छरी विभावन होइ ॥ १६९ ॥
 प्रथम वि० ३० ॥ विन मादक हरि नैन तुव चूमत अरु न ल
 खाव ॥ विन मेहं दी करतल अरु न विन जावक के पाय
 ॥ १७० ॥ द्वितीय वि० उदाहरण ॥ एक चक्र रथ बैठि रवि फि
 रत कोरन कोस ॥ करत अरु ध कर पग अरु न सारथि प
 नो अदोस ॥ १७१ ॥ तृतीय वि० उदाहरण ॥ श्याम हृदय
 सुमिरत तरु अपति उज्जाल मन होइ ॥ जीव हरत धर नृप
 तरु खरी लहत अघ खोइ ॥ १७२ ॥ चतुर्थ वि० उदाहरण
 विद्रुम मैते हैं कटी कुंद कली समुदाय ॥ दिवस प्रकाशि
 त देखियत न खत सहित हिजराय ॥ १७३ ॥ पंचम वि०
 उदाहरण ॥ सीतल मंद सुगंध जुत ताप चदावत पौन
 फूल्यो लखि उदपति उदय अबुज आनंद भौन ॥ १७४ ॥
 षष्ठी वि० उदाहरण ॥ पंकज तें निकली नदी सोहत ॥
 गिरिधरदास ॥ कल्प वृक्ष तें रतन निधि निकलो स
 हित हुलास ॥ १७५ ॥ विशेषोक्ति ॥ पुष्पलकारन तें

कारज उपजै नाहिं ॥ विशेषोक्ति तोहि कहत हैं कवि ज-
 न जग के मांहि ॥ १७६ ॥ उदाहरण ॥ हृदय श्याम धन
 जनित रस करत सर्वाहे छनवास ॥ तऊ तहों को ताप
 नहि नेकहु होत हिास ॥ १७७ ॥ असंभव लक्षणा ॥
 कार्य सिद्ध की वरति ये असंभाव्यताय च ॥ अलंकार
 उर आनि ये सुकवि असंभव तत्र ॥ १७८ ॥ लंक जारि
 हे मारि है कोटिन भर कल भौन ॥ इक वन चरख-
 न नासि है रह्यो जान तो कौन ॥ १७९ ॥ असंगति
 लक्षणा ॥ काज हेतु इन दुहुन की असंभाव्यताय
 च ॥ प्रति विरुद्ध जाली पर प्रथम असंगति तत्र ॥ १८०
 उदाहरण ॥ सिंधु जनित गरहर पियो मरे असुर समु-
 दाय ॥ नैन वान नैन न लग्यो भयो कोजे घाय ॥ १८१ ॥
 द्वितीय असंगति लक्षणा ॥ और और के काज कों और
 र और करि देइ ॥ द्वितीय असंगति समुभिये सुकवि स-
 मूह निसेइ ॥ १८२ ॥ उदाहरण ॥ शीश महावर और
 पै अंजन रंजन रूप ॥ आजु भोर आये अही चारु बने
 वृज भूप ॥ १८३ ॥ तृतीय असंगति ल ॥ और कार्य आ-
 रंभिये और कीजिये यत्र ॥ तीन असंगति में अहै त-
 य असंगति तत्र ॥ १८४ ॥ उदाहरण ॥ दुरव गोपन कों
 करन हित चले गोप सिर मोर ॥ दुरव गोपन कौना कि-
 यो अधि की कोनो और ॥ १८५ ॥ विषम लक्षणा ॥
 तीनि भांति बरलन करहिं कवि विषम लंकार ॥ अ-
 न मिलते को संगति तजानहु प्रथम प्रकार ॥ १८६ ॥

कारन औरैं सा को कारज औरैं सा ॥ तृतीय इष्ट उद्यम
 किये लहै अनिष्ट हि संग ॥ १८० ॥ प्रथम विषम उदाहरण
 कहं कोमल दशरथ सुवन कहं कठोर धनुर्दश ॥ कहं स
 मुद्र येजन अमित अति अगाध कहं कीश ॥ १८१ ॥ द्वि
 तीय विषम उदाहरण ॥ दीख सिखारंग पीत तें धूम कर
 त अति श्याम ॥ सेत सुयश छाये जगत प्रगर आपतें
 श्याम ॥ १८२ ॥ तृतीय विषम उदाहरण ॥ वनवारी हित
 वनगई मिलेन गोप मयंक ॥ लरैं नारि घर की संवै भूठ
 हि देहि कलंक ॥ १८३ ॥ समलक्षण ॥ वरनत तीन प्रका
 र हैं सुकवि सभालंकार ॥ यथा योग को संग इह प्रथम
 जानिये चारु ॥ १८४ ॥ कारन कारज दुहुन को एकहि ।
 अंग द्वितीय ॥ जाहित उद्दम करिय फल पाइय तो नत
 तीय ॥ १८५ ॥ प्रथम सम उदाहरण ॥ उचित सीस पै सो
 ह तो कस्तूरी को बिंदु ॥ सरस सरद राका बिषें उदित सु
 ते सोइंदु ॥ १८६ ॥ द्वितीय सम उदाहरण ॥ बचन चंद्र
 की चंद्रिका हरत ताप मुददानि ॥ बजरानी घन श्याम
 सों सुत जायो छवि खानि ॥ १८७ ॥ तृतीय सम उदा ॥ १८८
 हरी दूदन बज मैं गई पाये गिरि भालाल ॥ व्याह कियो
 सुख हेतु सो देति सु कीया वाल ॥ १८९ ॥ विचित्र ल ॥
 को यतन विपरीत जहं फल पावन के हेत ॥ सो विचि
 त्र भूषन संहें वरनत बुद्धि निकेत ॥ १९० ॥ उदाहरण ॥
 सुख इच्छा सों सुख तजें जागी हर्ष समेत ॥ धन लीबे का
 रन धानि धनी धन हिं है देत ॥ १९१ ॥ अधिक लक्षण

जहाँ पृथुल आधार तें अधिद अधेय सुहोय ॥ पृथुल
 आधार अधेय तें अधिक अधिक एतौय ॥ १८८ ॥ प्रथम
 अधिक उदाहरण ॥ उपमा उदाहि आधार में नहिं समाप्त सु
 खचंद ॥ ज्ञान कथा बिस्तार में तावत नद नंद ॥ १८९ ॥
 द्वितीय अधिक उदाहरण ॥ कितो रघु धन श्याम कोरोम
 रोम ब्रह्मंद ॥ कितो जमोदा गोद जिन खेलत ब्रह्म अखं
 द ॥ १९० ॥ अल्प लक्षणा ॥ होय अल्प अधेय तें और अ
 ल्प आधार ॥ गिरि धारदास बरवानिथेतिहि अल्पा लंका
 र ॥ उदाहरण ॥ १९१ ॥ परमानंद तें परम लघु मंगल
 जग बिरह्यात ॥ मोकतेरे हृदय महं लोभी नाहि समा
 त ॥ १९२ ॥ अन्योन्य लक्षणा ॥ जह उपकार परस्पर हि
 वरनत करी निरधार ॥ ताको कवि जन कहत हैं आन्यो
 न्या लंकार ॥ १९३ ॥ उदाहरण ॥ नृप तें सेना सोहती से
 ना तें नर चात ॥ दूलह ल से बरात सो दूलह सो बरियात
 ॥ १९४ ॥ विशेष लक्षणा ॥ तीन प्रकार विशेष है कवि बर
 नहिं गुनि श्रेय ॥ प्रथम ख्यात आधार विन जह बरनि
 य अधेय ॥ १९५ ॥ एक वस्तु कहें बरनि एठोर अने कहि
 तीय ॥ जहां अल्प उद्यम किये बहुत सिद्धि तीतीय ॥
 १९६ ॥ प्रथम विशेष उदा ॥ गएत मोहें तम रघो कोरौ
 बीच समाह ॥ कमल बिना कमलालया वह वैरी दासा
 य ॥ १९७ ॥ द्वितीय विशेष उदाहरण ॥ सोवत जागति दि
 शि बिदिश देखि परै धन श्याम ॥ कंस हृदय आरुह्य
 हर कृष्ण करैं विश्याम ॥ १९८ ॥ तृतीय विशेष उदाहरण ॥

गीता के पढ़तहि पढ़े चारि वेद सह तत्व ॥ चंदावन ल ।
 खन हिलख्यो गऊ लोक सुभ सत्व ॥ २०६ ॥ व्याघात ल ।
 जौन वस्तु तें होइ जोता सु विरोधी जौन ॥ निही वस्तु सों
 होइ जब है व्याघात सुतौन ॥ २०७ ॥ उदाहरण ॥ जा सु
 मिन सों भक्त जन पावहि पद निर्वनि ॥ ताही सों सनि-
 जगत जन भूमत फिरहि अज्ञान ॥ २०८ ॥ द्वितीय व्याघा-
 त लक्षण ॥ काज विरोधी काजही जहाँ समर्थो जात
 काज हेतु ही सों जहाँ सोद जो व्याघात ॥ २०९ ॥ उदा ॥
 कर्म करहि भव बंध दर योगी श्रुति अनुसार ॥ पामं हंस कर
 महि न जहि तिहि दर करि निरधर ॥ २१० ॥ कारन माला
 लक्षण ॥ कार्य हेतु जहं पूर्व को पा को उत्तरि जो होइ ॥
 ऐसी जहं परंपरा कारन माला सोइ ॥ २११ ॥ उदाहरण ॥
 दल तें बल बल तें विजय तातें राज हुलास ॥ कृत तें सुत
 सुत तें सुजस जस तें दिवि महं वास ॥ २१२ ॥ उत्तरि यथा
 धन गुन तें गुन पढ़न तें पढ़िबो गुरु तें होइ ॥ गुरु सुकर्म
 तें सुभ करम करिये उत्तम जोइ ॥ २१३ ॥ एकावली ल ।
 क्षण ॥ ग्रहन मुक्ति की रीति सों जहाँ अर्थ की ओलि
 अलंकार एकावली नाहि कहहि कवि मोलि ॥ २१४ ॥
 उदाहरण ॥ पढ़िबो गुनि वेलों गुन न अभ्यासन लों
 जानि ॥ अभ्यासहु निज ज्ञान लों ज्ञान भक्तिलों मानि
 २१५ ॥ माला दीपक लक्षण ॥ मिलि दीपक एकावली
 माला दीपक होइ ॥ इमि वरनहि आभरण यह कवि को
 विद सब कोइ ॥ २१६ ॥ उदाहरण ॥ जगज शतें जस

धर्म तें धर्म करम ते चारु ॥ करम वेद वचनानि ते भखे
 भूमि भरता ॥ २२० ॥ सार लक्षण ॥ सार स एक ते एक
 जहं अलंकार तहं सार ॥ कहूं स्तुति कहूं निंदमय कहूं उभय
 व्यवहार ॥ २२१ ॥ स्तुति मय उदाहरण ॥ पूज्य नरन ते अ-
 मर अति तिन तें हरि भागवान ॥ पूज्य हरि हु ते हरि भाग
 जाउर उन को ध्यान ॥ २२२ ॥ निंदमय उदाहरण ॥ सब
 ते लघु म सम सक ते रजकन पुनि परमानु ॥ परमान हुं
 ते गुनिरहित जानत जिन हि जहानु ॥ २२३ ॥ उभय मय
 उदाहरण ॥ बली विदश पुनि दस बदन तांते बालि
 स गर्व बली बालि ते लोभ है हखो अनुज धन सर्व ॥
 २२४ ॥ यथा सार लक्षण ॥ क्रम ते उक्त पदार्थ को क-
 रतें अन्वय यत्र ॥ कवि भूषण भूषण अहे यथा संख्य व-
 रत ॥ २२५ ॥ उदाहरण ॥ सुर कौं अरि कौं मित्र कौं मृत्यु
 रंक कौं भूप ॥ पूजहु मारहु आदरहु रसहु देहु अनूप ॥
 २२६ ॥ पर्याय लक्षण ॥ क्रम हीं सों जहं एक कौं होय अ-
 नेक आधार के अनेक को एक हीं द्वै पर्याय प्रकार ॥ २२७
 प्रथम पर्याय उदाहरण ॥ हुती देह में लरिकई बहुरित
 एई जेरा ॥ विरुधार्ई आई अवौ भजत न नंद किशोर ॥
 २२८ ॥ द्वितीय पर्याय उदाहरण ॥ मेरोई मन मोहित
 जिह रितन कियो निवास ॥ ताहुं कौं तजि कौं बस्यो अ-
 बसौ तिन के पास ॥ २२९ ॥ परिवृत्तिल ॥ थोरोई दीने जहं
 बहुत पदारथ लेत ॥ अलंकार परिवृत्ति तेहि वरनहि
 बुद्धि निकेत ॥ २३० ॥ उदाहरण ॥ विंध्या चल में गंग ॥

जल अर्क सुमन लै सेत ॥ दैकै देव कपदि कहं जान हसव
 र लेत ॥ २३१ ॥ पारी संख्या लक्षण ॥ जहाँ एक ही वस्तु को
 है निवेध इकठाम ॥ दूजे यल थापन तहां पार संख्या य
 हनाम ॥ २३२ ॥ उदाहरण ॥ बाल मन नै हर नहीं है बूढ़
 पितु धाम ॥ नहिं वृज में धन श्याम है वभ में संतल
 लाम ॥ २३३ ॥ विकल्प लक्षण ॥ एक विरोधी एक को
 तिन में कहि वै अद्य ॥ कै यह कै वह होइ गोसो विक
 ल्य अनवद्य ॥ २३४ ॥ उदाहरण ॥ बलजू अचन वाय
 हैं हलकै तेरो शीश ॥ यम पुर के पुरथापि हैं तोहि अब
 हिं अवनीश ॥ २३५ ॥ समुच्चय लक्षण ॥ एक साथ
 ही भाव बहु कछु कारण ते यच ॥ अलंकार उर आनि
 ये सुकवि समुच्चयतच ॥ २३६ ॥ उदाहरण ॥ फेरति
 दृगहेरति हरिहिं देखति नाम सुनाय ॥ फिरति धिरति
 उभकति कुकति भक्तति भरोखे आय ॥ २३७ ॥ द्विती
 य समुच्चय लक्षण ॥ एक एक ही हेतु तें जो कारण सिद्धि हो
 य ॥ तेहि काजहि सब मिलि करें द्वितीय समुच्चय सोय
 ॥ २३८ ॥ गंगा गीता गुरु गऊ गोकुल औ गिरि राज ॥ स
 सब मिलि कै देत है सत गति दिव्य दराज ॥ २३९ ॥ कार
 क दीपक लक्षण ॥ कम गति किया अनेक को कतीस
 कहि होइ ॥ कविता उपकारक अहं कार क दीपक सोइ
 ॥ २४० ॥ उदाहरण ॥ आवत पुनि अनमिल लखत
 लखि हिये हरषात ॥ वेणु बजावत नाम लै तो हित गो
 कुल जात ॥ २४१ ॥ समाधिलक्षण ॥ अपर हेतु तें कार्य

जहाँ सुगम भाग्य बस होइ ॥ सो समाधिगत व्याधि वखत-
त कवि सब कोइ ॥ ४२ ॥ उदाहरण ॥ चलत कंत वहैं का-
मिनी रो कन चहत प्रवीन ॥ गारजा गोहार मग आपो
चरजल हीन ॥ ४३ ॥ अत्यनी कल ॥ लखि अजीत नि-
ज प्रभु कहैं ताप छो कहैं जन ॥ कौ पराक्रम सत निज
प्रत्यनी कहैं तत्र ॥ ४४ ॥ उदाहरण ॥ हरि मारि पुहारि
सों महा कोप विलासि ॥ तदनु कारि मुनि वान को उर
बेधत सर मारि ॥ ४५ ॥ काव्यार्थ पतिल ॥ कौ काज
युक्तिहि कहा लघु में बाल गति ॥ होइ उक्ति ऐसी नहों
हैं कव्यार्थ अपत्ति ॥ ४६ ॥ उदाहरण ॥ शोक भरी मंदोदरी
बोली करि सुविचार ॥ वस सली वाली वयो तोहि मार-
त को बर ॥ ४७ ॥ काव्यलिंग लक्षण ॥ उक्त अर्थ जो पृष्ट
नहिं बिना समर्थन होइ ॥ ताहि समर्थिय युक्तिसों काव्य
लिंग हैं सोइ ॥ ४८ ॥ उदाहरण ॥ अव भव पारवार के
पारजात नहिं वार ॥ हैं सहाय रघु रायजू नी कारि वनहा-
र ॥ ४९ ॥ अर्थान्तर न्यास लक्षण ॥ जहाँ विशेष सामा-
न्यतें होय समर्थित रवास ॥ के सामान्य विशेष तें सो अ-
र्थान्तर न्यास ॥ ५० ॥ प्र० ॥ हरि प्रताप गो कुल नव्यो
कानहि कहैं महान ॥ हरिन कसि पुरा वणवयो यम सु-
ख को न समान ॥ ५१ ॥ द्वितीय उदाहरण ॥ बर तांबूल
प्रसंग तें यत्र जात नृप हाथ ॥ तें सेइ रतन प्रसंग तें बसन
खंडता साय ॥ ५२ ॥ विक स्वर लक्षण ॥ अरि विशेष स-
माव्य पुनि पुनि विशेष वसि यत्र ॥ इक इक कोइ ॥

कमहिंतेकहिं विकस्वरतत्र ॥ २५३ ॥ विकस्वरभेद ॥
 भेदविकस्वरमें सुगलवानत सुकविदुहंन ॥ जो विरोध
 अंतिम सुतौ कहं उपमान कहंन ॥ २५४ ॥ अथम विक-
 स्वर उदाहरण ॥ तुमदेहौ सत देत है जिमि सुरतरु मन
 मानु ॥ सुनितुम समउरतम हस्यो सुजन रीति जिमि भा-
 नु ॥ २५५ ॥ द्वितीय वि० ॥ दुर्योधन नहिं मानिहं ख-
 लकी औषधि हैन ॥ नीवहि गुड सों सींचिये होति मधुर
 तायेन ॥ २५६ ॥ प्रौढोक्ति लक्षण ॥ कारज गत उत्कर्ष
 को जीवन हेतु तेहि हेतु ॥ करवर्गनिय प्रौढोक्ति कवि मा-
 नता सु कहि देतु ॥ २५७ ॥ उदाहरण ॥ जमुना नीर नहा-
 तनित मन मोहन तन प्रथाम ॥ तो ओज परसे कदिन
 ताको उर है बाध ॥ २५८ ॥ संभावना लक्षण ॥ जो यह
 होइ तौ होइ यह ॥ सी उक्ति सुयच ॥ अलंकार संभावना
 वानहिं कवि जनतत्र ॥ २५९ ॥ उदाहरण ॥ जो जजरज
 होते सुतौ लगत लालन पाय ॥ जो खग होते तौ तुरत
 जाते जहं ब्रजराय ॥ २६० ॥ मिथ्या ध्ववसिति लक्षण ॥
 कथित भुटाई ताहि भ्रति दृढ़ करि वे कों यत्र ॥ अ-
 पर भुटाई कलिये मिथ्या ध्ववसिति तत्र ॥ २६१ ॥
 उदाहरण ॥ बहति बारि परधर बिगचि शुचि शीतल
 करि आग ॥ हेतरुणी वसतरुणतन करहु विषयस
 त्याग ॥ २६२ ॥ ललित लक्षण ॥ प्रसुत गत वृत्तांत जो
 वर्णनो यतजि तौन ॥ अप्रसुत प्रति विवमत कहिय ल-
 लित प्रति धौन ॥ २६३ ॥ उदाहरण ॥ अदपछिताये

होत का चुग्यौ चिरेयन खेतु ॥ चाहति उत्तरन पारतुं विना
 नाव बिन सेतु ॥ २६४ ॥ प्रहर्षन लक्षणा ॥ तीन प्रहर्षन में
 अहं प्रथम प्रहर्षन सोइ ॥ जतन विनाहीं लाभ जहं वो
 छित फल को होइ ॥ २६५ ॥ उदाहरण ॥ जाको मिलि
 वो चाहत है महत मनोहर श्याम ॥ सो चलि आई आपु
 ही पूछत तुम्हरो नाम ॥ २६६ ॥ द्वितीय प्रहर्षण लक्षणा
 वांछित फल तें अधिक फल विनहीं अस जहं होइ ॥
 कविरस वर्षण कहत हैं द्वितीय प्रहर्षण सोइ ॥ २६७ ॥
 उदाहरण ॥ चह्यो सुदामा अल्प धन दियो भूरि भग
 वान ॥ तिय हिय पिय दरशन चह्यो आप दियो रति दा
 न ॥ २६८ ॥ तृतीय प्रहर्षण लक्षणा ॥ तृतीय प्रहर्षन त
 हें जहां फल साधक जु उपाय ॥ ताही को साधन करत
 फल आपुहि मिलि जाय ॥ २६९ ॥ उदाहरण ॥ पिय पा
 ती सुधिलेन कों निकरी नारि बजार ॥ उत तें आप चलि
 मिलि गये गिरि धर लाल उदार ॥ २७० ॥ विषादन ल
 जो विरुद्ध चित चाहतें सोई कारज होइ ॥ ताहि विषा
 दन कहत हैं अलंकार सब कोइ ॥ २७१ ॥ उदाहरण ॥
 हरि सें रति दच्छा करी अपतिहि चाह सें वाल ॥ सुन्यो
 जात मथुरा नगर लै प्रकूर गोपाल ॥ २७२ ॥ अल्लास ल
 जहं इक के गुन दोस तें होइ ओर को तीन ॥ अल्लासा
 लंकार तें हि वानहि कवि मति भौन ॥ २७३ ॥ कहं गुन
 तें गुन दोस तें दोस गुन हूं ते दोस ॥ दोस हूं तें गुन होत
 इमि वानत कवि मति कोस ॥ २७४ ॥ गुन तें गुन यथा

तीरथ चाहें परसि मोहि कहिं सुपावन संत ॥ शास्त्र च-
 हहिं पदिसुफल मोहि कोरे विज्ञतु धवत ॥ २७४ ॥ दोष ते दोष
 यथा ॥ या राजा के राज्य में भूलि जाय जनि सोय ॥ राज
 भृत्य धन चारि हैं तब का करि है रोय ॥ २७५ ॥ गुन ते दोष
 यथा ॥ सो घर को सु अभाग जहं यज्ञ दान नहि होइ ॥
 सो विद्या किहि काम जेहि शिष्य हुल है न कोइ ॥ २७६ ॥
 दोष ते गुन यथा ॥ समुभावन मासो चरण हरन
 कियो तुव मान ॥ लाभ इतोइ गुन हु जो बच्यो विभीषण
 मान ॥ २७७ ॥ अवज्ञान लक्षण ॥ गुन ते गुन नहि होय
 अरु नहि दोष ते दोस ॥ कहहि अवज्ञा दोष विधिइ-
 मि कवि कविता कोस ॥ २७८ ॥ प्रथम अवज्ञा उदा० ॥
 सत कविता हूं के सुने नहि हुल से सद चित्त ॥ कसर उ-
 पजे अन्न नहि वर सत हं जल निज ॥ २७९ ॥ द्वितीय अवज्ञा
 उदाहरण ॥ शिव तुम हला हल पियो कहा अमृत की
 हानि ॥ राखि समाये अंग नहि चंदन लघुता मानि ॥
 २८० ॥ अनुज्ञा लक्षण ॥ जहं अभिलाषा दोस की ता-
 ही में गुन पाय ॥ तहां अनुज्ञा आभरन कहिं सकल
 कविराय ॥ २८१ ॥ उदाहरण ॥ हे विधि मोहि कव करहु ॥
 गे नरतन ते ब्रज धूरी ॥ गो चारन मोपाल तनर हों बात
 वस पूरी ॥ २८२ ॥ लेश लक्षण ॥ दोसहि गुन करि वरि-
 ये गुनहि दोस करि यत्र ॥ कवि कुलेश वरन न करिं ॥
 लेश अलंकृत तत्र ॥ २८३ ॥ उदाहरण ॥ वरु अरसिक प-
 सुहो भले बधिकहि देखि पराहिं ॥ राग रसिक मृग मोह

वसववस मोरे जाहिं ॥२८४॥ सुदालक्षण ॥ प्रस्तुत के
 बरनल निषं कंदे श्रीरको नाम ॥ पैन विदित सह पाठ के
 सो सुदा गुन धाम ॥२८५॥ उदाहरण ॥ परम भाग्य तह
 दजित मत्र सेय पद दोय ॥ हरि अवतार प्रमाण कदो
 हार्दित व होइ ॥२८६॥ भस्मावली लक्षण ॥ जासु विदि
 त सह पाठ है कंदे ताहि को नाम ॥ प्रस्तुत के वरन न वि
 षं रत्ना वलि तिहि राय ॥२८७॥ उदाहरण ॥ वास करत
 अपाराम में भरत हित न अनंद ॥ देत लक्ष मन को गु
 निन शत्रु दमन नंद नंद ॥२८८॥ तदुलक्षण ॥ रूप
 आदि गुन पुंज में जो निज गुन तजितौ न ॥ दूजे को गु
 न लेहिं तह है तदुन गुन भौन ॥२८९॥ उदाहरण ॥ ति
 य हिय ही राधुकधु की नील वरण हस्माय ॥ पिय हिय
 की कंचन वरन परे पास पर छाया ॥२९०॥ पूर्व रूप ल ॥
 पूर्व रूप है निज गुन हित जि पुनि तिज गुन लेइ ॥ दुति ॥
 य वस्तु ना सेहु नहीं मिटे अवस्था सेइ ॥२९१॥ प्रथम उदा
 हरण ॥ जपन लाल माला लिये लाल नाम तु व बाल
 ॥ मनिका पासत असित पुनिकरतल दुति परिलाल
 ॥२९२॥ दुतिय उदा ॥ कहा भयो जो करन को मरन भ
 यो न राख ॥ रही जगत में आपु की दीह दान विधि छा
 य ॥२९३॥ अत दुलाल ॥ संगी को रूप आदि गुण कातन अं
 गी कार ॥ ताहि अत दुलाल आभरन वरन त बुद्धि रंगार
 ॥२९४॥ उदाहरण ॥ सदा श्याम हिय तिय वसति तिय हि
 य हरि विश्याम ॥ तऊन गोरे होत हरि श्यामा होति न ।

श्याम ॥ २८५ ॥ अनुगुनलक्षण ॥ निजगुन सो सर सात जो तैसी
 लहे सहाय ॥ तालें अरु अधिकाय सो अनुगुन नाम कहा ॥
 य ॥ २८६ ॥ उदाहरण ॥ कुरकी को पुरदे कियो निंब पत्रा-
 सकाथ ॥ ताकरुता नहि कहि संकेजे पदुपंडित नाथ ॥ २८७ ॥
 मिलितलक्षण ॥ समता तें इक वस्तु में अपर वस्तु छपि-
 जाय ॥ कहुन भेद जान्यो पोरै मीलित तहां लखाय ॥ २८८ ॥
 उदाह ॥ पान पीक अध्यान में सखी लखी नहि जाय ॥ क-
 जरारी अखियाँ न में कजरारी न लखाय ॥ २८९ ॥ सामान्य-
 ल ॥ बहुत वस्तु सम होय जहं नहि विशेष लखि जाय ॥ जा-
 नि पोरै सब एक से तहं सामान्य कहाय ॥ २९० ॥ उदा ॥ रवरी
 दीपमाला विषे बाला सति अभिराम ॥ कोति पको दीपक ॥
 सिंवा मनहि विचारत श्याम ॥ २९१ ॥ उन्मीलितल ॥ समता
 तें इक में अपर वस्तु जाय छपि जत्र ॥ तदपि भेद कहु लखि
 पोरै उन्मीलित है तत्र ॥ २९२ ॥ उदा ॥ हरित माल के कुंज में नहि
 लखाहि छबिरानि ॥ पीतांबर में सेत दिय तिय पिय को पहिचा-
 नि ॥ २९३ ॥ विशेषल ॥ समता संजुन वस्तु में कहु विशेष दसा-
 य ॥ जातें जान्यो जाय वह निहि विशेष उदाहरण ॥ २९४ ॥ उदा ॥ सेत
 हंस वक सेत हैं कै से पौ लखाय ॥ पय पानी अपो धरे भेद सकल
 खलि जाय ॥ २९५ ॥ उत्तरल ॥ अभिप्राय संयुन जहां गूढ़ोत्तर दा-
 न ॥ अलंकार वत्तर तहां वरनत बुद्धि निधान ॥ २९६ ॥ उदा ॥ ब-
 सन कहौ कै से पथि कहै सुनो ममाधाम ॥ पौ हो बा अपास में सब
 विधि को अपास ॥ २९७ ॥ चित्रलक्षण ॥ वही पत्र उत्तर कहै क-
 है कहियत करि निधार ॥ अरु इक उत्तर पत्र बहु से चित्रालंकार

३०८ एक प्रभोत्तर को उदाहरण ॥ कोकिल सुंदर नाद क
र कामहिं बल सुविशाल ॥ केकी बहुता बज विषे को-
समंत माहि पाल ॥ ३०९ ॥ अनेक भूषे कोतर ॥ कौन बा-
ले केदार में काको बल केदार ॥ कोहरे वक श्रौषधी हर
उत्तर विधार ॥ ३१० ॥ सुख लक्षण ॥ पाश्याशय लखि
वे को चेशा साभिमाय ॥ उत्तर रूप अनूप जहंत हौ सु-
ख कविण्य ॥ ३११ ॥ उदाहरण ॥ लखन लख्यो रघुनाथ
दिशि निसि चर व्याहन काम ॥ तर्जनि पै धरितर्जनी ॥
अंचिल ईत वरम ॥ ३१२ ॥ पिहित लक्षण ॥ ४ ॥ ० ॥
कोऊ पारुषांत लखि ताहि प्रकारे यव ॥ चेशा साभिमा-
य करि पिहिता लंकुतिन ॥ ३१३ ॥ उदाहरण ॥ मातला-
ल आपरे निरखि जावक सायो भाल ॥ अतुर चातुर
ता भरी दर्ह आसी वाला ॥ ३१४ ॥ व्याजो किल लक्षण ॥
जहं गोपन आकार को करै वात कहि अन्य ॥ तहं व्या-
जो किल वखान ही जे कवि धरनी धन्य ॥ ३१५ ॥ उदाहरण ॥
आरजन मानी नैक दुख रज ही बहुवार ॥ वावन बहुत
गुलाव तरु कौन लगे तन डार ॥ ३१६ ॥ गूढोक्ति लक्षण
जहं कोऊ कहि और सो और हि देइ सुनाय ॥ जातं लख-
हिं न निकट जनं तहं गूढोक्ति कहाय ॥ ३१७ ॥ उदाहरण
गूढोक्ति के दोय भाति दसाहि ॥ वह श्रेय युत देखिये क-
हुं श्रेय जुत नाहि ॥ ३१८ ॥ श्रेय सुक्त को उदाहरण ॥ जाहु
परोसी या समय या दिन आवति वात ॥ आए पाहन
अग्र चित सुरति करी गीरात ॥ ३१९ ॥ अश्रेय रसित को उदा-

पावनमंगल जायहोंभीरहेतितरमांभ॥ तते जाय नहा-
 यहोंसखी सकेलीसोंभ॥ ३२०॥ विहृतोक्ति लक्षण॥
 गुप्त अर्थ जहं आपही कवि सूचित करि देत ॥ अलंकार
 विहृतोक्ति तेहि वरनत बुद्धि निकेत ॥ ३२१॥ लक्ष्य माहिं
 विहृतोक्ति के गुप्त अर्थ विधि दीय ॥ शब्द शक्ति सों होय
 कहूं अर्थ शक्ति सों होय ॥ ३२२॥ शब्द शक्ति को उदाहरण
 जौ गोरस चाहत लियो तौ छावहु मम धाम ॥ यों कहि ।
 याजक सों हरिहि किय सूचित रति ठाम ॥ ३२३॥ अर्थ श-
 क्ति को उदाहरण ॥ मों मन न अचात है सुनि भूठी रस
 बात ॥ दूमि कहि भूठी बालत बलाल लगाई गात ॥ ३२४
 युक्ति लक्षण ॥ निज मर्म हिं गोपन करे कछू किया करि
 यव ॥ गिरिधर दास बखानिय युक्ति अलंकृत तव ॥
 ३२५॥ उदाहरण ॥ हरि सों रति करि नित उरी आइ गई
 नित सास ॥ चौर फसाइ करील सों ठाढ़ी लेत उसास ॥
 ३२६॥ लोकोक्ति लक्षण ॥ लोक प्रवाद बखानिये वच-
 न बीच जेहि ठौर ॥ अलंकार लोकोक्ति तेहि वरन हिं बु-
 ध सिरमौर ॥ ३२७॥ उदाहरण ॥ कहान सावत शोक को
 सुखो ज्ञान बताय ॥ ऊधो आप सुनी कहूं प्यास प्यास
 तें जाय ॥ ३२८॥ छेकोक्ति लक्षण ॥ अपर अर्थ व्यंजक
 जहां सोइ लोकोक्ति लावाय ॥ वचन न की रचना न तें
 तहं छेकोक्ति कहाय ॥ ३२९॥ उदाहरण ॥ दूती पद वृ-
 ती कहा कौनो नहि प्रतिबंध ॥ दोनो बनि आपो भलो
 सोनो और सुगंध ॥ ३३०॥ बकोक्ति लक्षण ॥ सुनत ।

वाक्य रोपादिवसरचै अर्थ जहं और ॥ कहूं शेषहुं का
 कुसौ वक्त उक्ति तिहि दौर ॥ ३३१ ॥ शेष वक्तोक्ति उदाहर
 ण ॥ मानतजोगहि सुमति वर पुनि पुनि हेति न देह ॥
 मानतजोगी येता को नहिं हम करत सनेह ॥ ३३२ ॥
 ककुवक्तोक्तियथा ॥ तोहित्यागि श्यामहि सर्वा अरु
 तिय नाहि सुहाय ॥ अरु तिय नाहि सोहाय सुनिबोली
 नैन चढाय ॥ ३३३ ॥ स्वभावोक्ति लक्षण ॥ शिशुत्वादि
 जो जाति है तदागत जौन सुभाव ॥ ताको बरनन कर
 ततहं स्वभावोक्ति कविराय ॥ ३३४ ॥ उदाहरण ॥ धू
 धूरे धरनि में धात अर परे पांय ॥ लाल लट परे आ
 खरनि भाषत सरि हार पाय ॥ ३३५ ॥ भाविक लक्षण
 भूत भविष्य पदार्थ को जहां सकल कविराय ॥ बरन
 त करि प्रत्यक्ष तहं भाविक भाष्यो जाय ॥ ३३६ ॥ भूत
 प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ विष्णु वजावत मधुर सुर को दिल जावत मे
 नु ॥ ऊधो आवत अजहं हरि ताम्र चरावत धेनु ॥
 ३३७ ॥ भविष्य प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ ग्राम सिंह नृप ह
 द में श्याम सिंह सम विप्र ॥ मैं देखति कर पकरि मो
 हि जात सुरधरि छिप्र ॥ ३३८ ॥ उदात्त लक्षण ॥
 स्वाघनीय जो चरित सो अंग और को होइ ॥ अरु अ
 तिसंपति वरनि बोहै उदात्त विधि दोष ॥ ३३९ ॥ प्रथम
 उदात्त उदाहरण ॥ मुनि जन ध्यावहिं जासु पद दार
 सन पावहिं रंच ॥ ते कुब जाके भवन में राजत बैठे
 मंच ॥ ३४० ॥ द्वितीय उदात्त उदाहरण ॥ तो घर नैं

डारहिं जनी घरी मनी ननु हारि। तिन ते भे नग नग घने
 लखहु मेरु अनु हारि॥३४१॥ अत्युक्ति लक्षण॥ ज-
 हें उदारता सूरता विरहादिक की उक्ति भूषण मिथ्या
 होयत हें अलंकार अत्युक्ति॥३४२॥ उदारता यथा॥
 भूपति तैरे दान संधाया भयो सुमेर॥ भरक हें देत
 मदच्छिना सूरत हें बहु फेर॥३४३॥ सूरता यथा॥ तो
 प्रताप डर मान ताज शत्रु गये यम लोक॥ इतहु नम-
 रे आइ यह नऊ हृदय डर ओक॥३४४॥ विरह यथा॥
 जावन विरहिनि जाति है तजति स्वाम शिलि ज्वाल
 तावन के सारवी गिरे राखी है तत्काल॥३४५॥ निरु-
 क्ति लक्षण॥ जहां योग वसनाम को कल्पित औरें
 अर्थ॥ तहें निरुक्ति भूषण कहें कविकुल तिलक स-
 मर्थ॥३४६॥ उदाहरण॥ जौं पाकीया त्यागि कैच
 ले विदेश सचैन॥ तौ विषई तुम सांच हौं प्रवला।
 मानहि लैन॥३४७॥ प्रतिषेध लक्षण॥ जहां प्रसि-
 द्ध निषेध को अनुकीर्तन दरसाय॥ प्रतिषेधालंकार
 तिकहहिं तिहि अति मतिक विराय॥३४८॥ उदाह-
 रण॥ नहि विराट को पाक धर जहें करछी व्यवहार॥ यह
 संगर जामें चलैं बरछी वारंवार॥३४९॥ विधिलक्षण॥
 सिद्ध वस्तु ही को जहां कोऊ करै विधान॥ विधि भूष-
 न तहें जानिये इहि विधिकहहिं सुजान॥३५०॥
 उदाहरण॥ कम सौ पहुंचत अरक जब स कम कर-
 क नगीच॥ जीवन मद शान्ति होत तब जीवन मद

जगबीच ॥३५१॥ हेतुलक्षणा ॥ जहां काज के साथ ही
कारन वरयो होइ ॥ कैदो उन की सकता होत हेतु वि-
धि दोइ ॥३५२॥ प्रथम हेतु उदाहरण ॥ गरजि उदे घन
माननो मान मिरावन काज ॥ धनु रंकासो धूपनै श-
बुन सावन आज ॥३५३॥ द्वितीय हेतु उदाहरण ॥ मो-
हि परम पद मुक्ति सवतो पद रज घन श्याम ॥ तीनि
लोक को जीतिवो मोहि बसिवो ब्रज गाम ॥३५४॥ दु-
त्यर्थी लंकार समाप्त ॥ अथ शृङ्गलंकार ॥ इति अ-
र्थी लंकार सत वरनि बुद्धि अनुसार ॥ वरनत गिरिधर
दास कवि अब शृङ्गलंकार ॥३५५॥ अनुपाम लक्ष-
णा ॥ खर विन बंजन वरन की जहं समता दासाइ ॥
खर संयुक्तहु कहं हितेहि अनुपाम कवि एइ ॥ अथ
उदाहरण ॥ मन मोहन मोहन भले लसत सीलेने-
न ॥ रादे गुन गादे अहं कहत छवीले नैन ॥३५६॥
अथ छेकानुपाम लक्षणा ॥ समता बहु बंजनन
की कम सों जहं इक बार ॥ तहं छेकानुपाम है सुनिधे
सुकवि उदार ॥३५७॥ उदाहरण ॥ शुभ सोभा सोहै
सही बारी बर चल चाल ॥ सोना सीनो रसरसी बनी ब-
नै बलि बाल ॥३५८॥ तृतीय अनुपाम लक्षणा ॥ समता
बहु बंजनन की जहं विनु कम इक बार ॥ कै कम सों
बहु बार तहं हृत्ति अलं कति चारु ॥३५९॥ एकहु बंज-
न की जहां समता करति निवास ॥ एक बार बहु बार
करि तहां हृत्त्यनुपाम ॥३६०॥ एक बार बहु बंजन सम-

लायथा ॥ लसे शैल पर रूप धरन ववन हरि रस साथ ॥
 स्वसे मुख मय चारु रुचि धरे राधिका हाथ ॥ ३६२ ॥
 कम से बहु बार व्यंजन समता यथा ॥ बैन बने बनिता
 सुखद व्रज विधु बुध बुधि येन ॥ नील नील नल ना-
 च्छ हरि को किल कल किल बैन ॥ ३६३ ॥ एक व्यंजन को
 एक बार समता यथा ॥ ठाढ़े गाढ़े गुन बनो सरि वदेखो
 हम श्याम ॥ पीति मंत सो है महानि सि बसि श्यामा
 धाम ॥ ३६४ ॥ एक व्यंजन की बहु बार समता यथा ॥
 घेरि जोर करि तोर गुरु जुरे वारि वारि घोर ॥ फिरि फिरि
 डोरें वारि गिरि वर पर चारों ओर ॥ ३६५ ॥ श्रुत्यनु प्रास ल-
 क्षणा ॥ तालु रसादि कथान कृत व्यंजन को उच्चार ॥ ज-
 हां साहस अनुप्रास श्रुति वर निय करि निरधार ३६६ ॥
 चतुर जान की चारु रुचि चंचल अच्छ प्रतच्छ ॥ फ-
 कति चंद मुख चनहि छन जाइ भरोखे स्वच्छ ॥ ३६७ ॥
 अंत्यानु प्रास लक्षणा ॥ आदि स्वर संयुत जहां व्यं-
 जन आहत होइ ॥ सो अंत्यानु प्रास है कहियतु कां-
 तहि जोइ ॥ ३६८ ॥ उदाहरण ॥ नीरधीर पर पीर हर सं-
 ग अहीर की पीर ॥ नीर तीर जहं कीर बहु लसे सोर धरि
 बीर ॥ ३६९ ॥ लारानु प्रास लक्षणा ॥ शब्द अर्थ द्वय
 दुहन की जहं पुन रुक्ति प्रकास ॥ तात पर जमहं भेद
 कछु तहं लारानु प्रास ॥ ३७० ॥ उदाहरण ॥ राजिव
 मुख राजिव नयन लखो नयन की कोर ॥ करि कह-
 ना कहना करन लख चोरी दुख चोर ॥ ३७१ ॥ यमक

लक्षण०॥स्वरव्यंजन गनकी जहां आवति सुकवि,
 वीरगड॥यमक सोई है दोय विधि इक अखंड इक
 गवाह॥३७२॥सो अखंड सार्थक सबै शब्द जमक को
 होय॥खंड शब्द सार्थक कोऊ कोऊ निरर्थक सोय॥
 ३७३॥अखंड यमक उदाहरण०॥भूषक न कुंडल
 करन करन शत्रु मदन नास॥आदि बरन वर बरन वित
 उज्जल बरन प्रकास॥३७४॥खंड उदाहरण०॥जन
 उधरन अंधु ज धरन वर अधरन छवि खानि॥सर-
 न सुखद अरि सरन जित सरन वित मुद दानि॥३
 ७५॥शब्द अर्थ०॥आभरन दोऊ इह विधि भये
 समाप्त॥इन को पहि गुनि गुनिन को कहै है अति सु-
 ख प्राप्त॥३७६॥कवि भारति भूषन परम भारति भू-
 षन एहु॥भारति चरन मनेहु धरि सत कवि इहि प-
 दि लेहु॥३७७॥विधि विधि गुनि शिव शिव इहि गुनि
 करत चरन रज आस॥बार बारतिन के चरन बंदत
 गिरि धर दास॥३७८॥इति श्री नंदनंदन पदार बिंद
 मलिनंद धनाधीश श्री बाबू गिरि धर दास कवीश्व-
 र विरचित भारती भूषण मलंकार समाप्तम् ॥

इति

061. 773 / 58/0

1112

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
इन्द्रसभा	गोपीचंदभरतरी	लीलावती	संस्कृतउर्दूटीका
विक्रमविलास	कथा श्रीगंगाजी	पदचारियोंकीपुस्तक ४ भाग	सहित
खेताल पच्चीसी	अवधयाना	संस्कृतकीपुस्तकें	वनुरसूति
विंदासनबत्तीसी	भरतरीगीत	लघुकोमुदी	विलुहारीतस्मृति
पञ्चावतीरवराह	बानलीला नागली	निदानचन्द्रिका	सहिष्णुस्तोत्र
शुकवह्नरी	ला	अमरकोशतीनों	संस्कृत भाषाटीका
वकावली सुमन	दोहावली रत्नाव	कांड	अमरकोशतीनोंकी
चहार दरवेश	ली	पंचमहाजन्म	एड
क्रिस्ताहातमताई	गोकारोमहात्म	निर्णयसिन्धु	यानवल्लवसूति
आपूर्वकथा	श्रीगोपालसहस्र	संग्रहशिरोमणि	सन्ध्यापद्धति
क्रिस्तागुलसनोवर	भास	भगवद्गीतासटीक	व्रतार्क
सहस्ररजनीचरित्र	कथासत्यनारायण	विलुभागवत	भावद्गीताटीका
गविंस्त्रोशोकाद	हनुमानबाहुक	भविष्योत्तरपुराण	हरिवंश
तिहास	जन्मक पच्चीसी	अपराधभजनस्तोत्र	भगवद्गीताटीका
वैद्यक	आनन्दाभूतवर्षि	दुर्गापाठसटीक	आनन्दशिरि
निघण्टभाषा	राणी	दुर्गास्तोत्र	गीतगोविन्द
अमरविनोद	वनयाना	कायस्थकुलभास्वर	कथासत्यनारायण
वैद्यजीवन	कायस्थवर्गानिरूप	कायस्थधर्मनिरूप	परमार्थसार
श्रीषधिसंग्रहकल्प	यरा	परा	शाङ्गधरसंहिता
वल्ली	विहारविंदावन	तथाहोदा	पद्माशरी
अमृतसागर	समरविहारविंदावन	मथुरासभा	श्रीधरबोध
वैद्यमनोत्सव	कल्पभाष्य	ज्योतिष	लघुजातक
ज्योतिष	हरती	सुहृन्तर्गणपति	षट्पंचाशिका
जातकचन्द्रिका	अक्षरावली	सुहृन्तचक्रदीपिका	सामुद्रिक
जातकालंकार	स्वयंबोध	सुहृन्तचित्रामणिस	सरिशितालीम
देवज्ञाभरण	ज्ञानचालीसी	सुहृन्तदीपिका	कीपुस्तकें
ज्ञानस्वरोदय	दोहावली	सुहृन्तमार्तण्डस	संस्कृत
रत्नलसार	बालाबोध	सुहृन्तजातकसटीक	अनुपाठ १ भाग
इन्द्रजाल	विद्यार्थीकीप्रथम	जातकालंकारस	तथा २ तथा ३ भाग
मुतफरकान	पुस्तक	जातकाभरण	धास्वर्णव
शनिश्वरकीकथा	किताबजंत्री	होरामकरम्	कावरी
ज्ञानमाला	गणितकामधेनु		

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वर्णमाला १ भाग	दुर्गिलस्तान का इतिहास	हिदायत नाशामुद्-रिस्तान्	एक तालुकदारान्
तथा २ भाग	हास		नकसुल्ल अथ ५२४
तथा कैथी फारसी	भारत वर्षीय काव्य	पद्म बरवत कैथी	सन् १८७० ई०
नागरी हस्त लिपि	तिहास	तथा कबूलियत	एक चौपायों की मदा
दात	हिती पत्रिका	गजिस्टर द्वा दिल	खिलत बेजा का
अक्षरारम्भ	बाला भूषण	खारिज तुलनाम	१ सन् १८७१ ई०
वर्ण प्रकाशिका	पद्य संग्रह	दर्मा	मजमूआ जाबिता
१ भाग व २ भाग	भाषा काव्य संग्रह	गजिस्टर हाजरी या	क्रौजदारी १० सन्
सहज गुरकी कदानी कवित्त सत्ता कर १ भाग	तथा २ भाग	४ भाग	१८७२ ई०
धर्म सिंहा कवित्त	मंगल कोश	ज्ञानून	एक तालुकदारानी
शिक्षावली	अंक प्रकाश	नागरी	मगरवी व शिमाली
शिष्ट बोध	गणित प्रकाश १ भाग	एक लगान मगरवी	१८ सन् १८७३ ई०
पञ्च विधैषिणी	तथा २ भाग ४	शिमाली १० सन्	तरमीम मजमूआ
पञ्च दीपिका	गणित प्रकाश	१८५८ ई०	जाबिता क्रौजदारी
विद्या चक्र	खेच चन्द्रिका २ भाग	दुन्दियन पिनल कोड	११ सन् १८७४ ई०
विद्यांकर	सकील वायरा	मजमूआ जाबिता	तकावी के जायदे
पदार्थ ज्ञान विदप	रेखा गणित १ भाग	क्रौजदारी एक २५	सरकूलर रावर्ध मे
पदार्थ विद्यासार	तथा २ भाग	सन् १८६० ई०	एद नखर ८० (अ-
भोज प्रबंधसार	वीज गणित १ भाग	एक स्थाय १० स-	लिफ.) सन् १८७७ ई०
राजनीति	तथा २ भाग	न १८६३ ई०	सवाल जवाब पुलि
तथा	रामायण तुलसीदा	एक गजिस्टर ३०	स
भाषा लघु व्याकरण	हाल काण्ड	सन् १८६६ ई०	अवध रुहेल खंड
१ भाग तथा २ भाग	अथो ध्या काण्ड	एक स्थाय अक्षर-	रेलव का दस्तूरुल
भाषा तत्त्व दीपिका	आरय काण्ड	ल २६ सन् १८६७ ई०	अमल
भाषा चन्द्रोदय	किष्किन्धा काण्ड	मजमूआ एक अ-	कैथी
भूगोल तत्त्व	सुन्दर काण्ड	वध लगान १८ सन्	पदचारियों के जायदे
भूगोल दर्पण	लंका काण्ड	१८६८ ई० धरसाद	उर्दू कैथी मद्रासी
द्विद्वामतिमिरना	उत्तर काण्ड	री ३६ सन् १८६६ ई०	देवते के लाइसेंस
प्रका १ भाग व २ भाग	गुटका १ भाग	दीपिका	का एक २ सन् १८७८
व ३ भाग	तथा २ भाग ३ भाग	एक स्थाय दस्ता-	ई० पंजाब मगरवी व
अवध देशीय भूगो-	पशु चिकित्सा	वेजात १८ सन् -	शिमाली अवध इति
ल		१८५८ ई०	

